बच्चों के लिए बाइबिल

प्रस्तुति

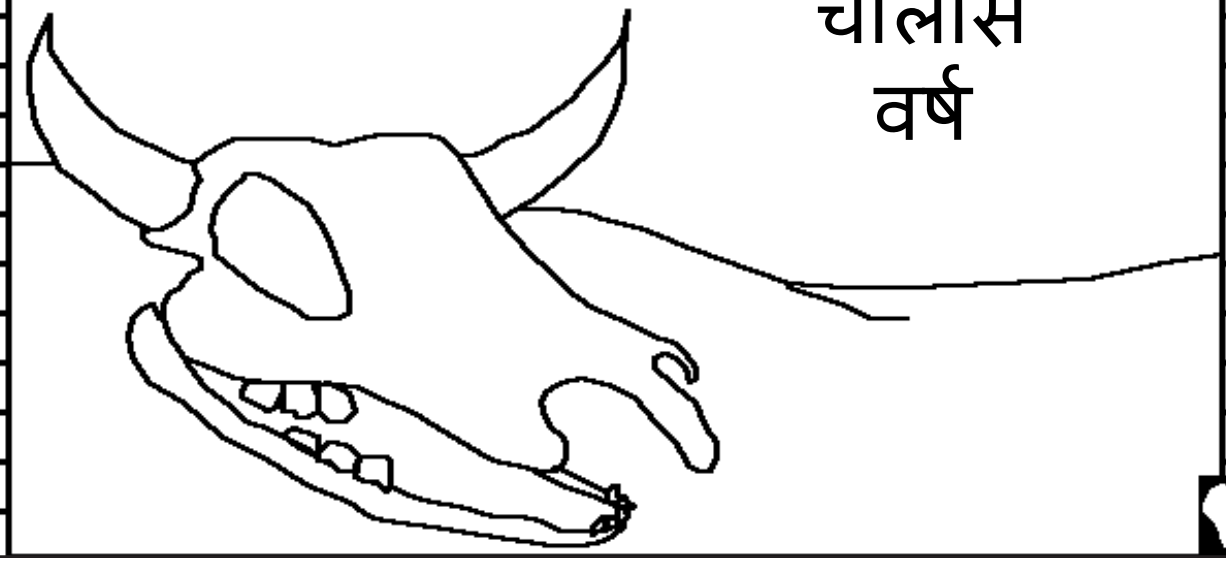

चालीस वर्ष

लेखक : Edward Hughes
व्याख्याकार : Janie Forest
अनुवाद : Suresh Kumar Masih
रूपान्तरकार : Lyn Doerksen

60 कहानियों में से 12 (पहला)

www.M1914.org

Bible for Children, *PO Box 3, Winnipeg, MB R3C 2G1 Canada*

अनुज्ञापत्र (लाइसेंस): आप इन कहानियों की छाया प्रति और मुद्रण करवा सकते हैं, बशर्ते कि बेचें नहीं।

हिन्दी Hindi

जब परमेश्वर इस्राएलियों को बचाकर मिस्र से बाहर ले आया तब, मूसा ने आराधना में लोगों का नेतृत्व किया। वह आराधना का एक गीत भी बनाया। "मैं यहोवा का गीत गाऊंगा क्योंकि वह महाप्रतापी ठहरा है।" परमेश्वर ने इसराइल के लिए जितने बड़े बड़े काम किया था, सब के लिए मूसा ने गीत गाया।

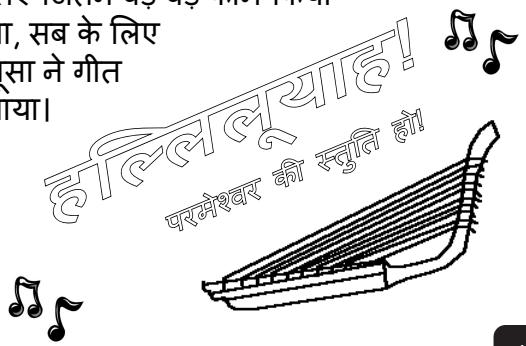

रेगिस्तान में तीन दिनों के बाद प्यासे लोग एक कुण्ड को पाये। लेकिन वे उस कड़वे पानी को पी न सके। प्रार्थना करने के वजाय, लोगों ने शिकायत की। परमेश्वर बहुत दयालु था। उसने पानी को पीने योग्य बना दिया।

ऐसा लगता है की लोगों ने सब कुछ के लिए शिकायत की थी। "हमारे पास मिस्र में भोजन था। वे बिलखने लगे," हम रेगिस्तान में भूखो मर जाएगे। उसी शाम परमेश्वर ने बटेरों को उनके मध्य भेजा। लोग उन्हें आसानी से पकड़ सकते थे।

3

अगली सुबह परमेश्वर ने मन्ना भेजा। यह एक ऐसा रोटी था जो शहद के पूवे की तरह चखने में लगता था।

हर सुबह मन्ना तैयार जमीन पर पड़ा रहता था की बटोरा जा सके। इस तरह परमेश्वर रेगिस्तान में अपने लोगों को खिलाया।

4

उन्हें हर दिन भोजन के लिए परमेश्वर पर भरोसा करना था। लेकिन कुछ लोगों ने आवश्यकता से ज्यादा मन्ना एकत्र किया, यहाँ तक की। परमेश्वर ने कहा था की वह दूसरे दिन तक नहीं बचेगा।

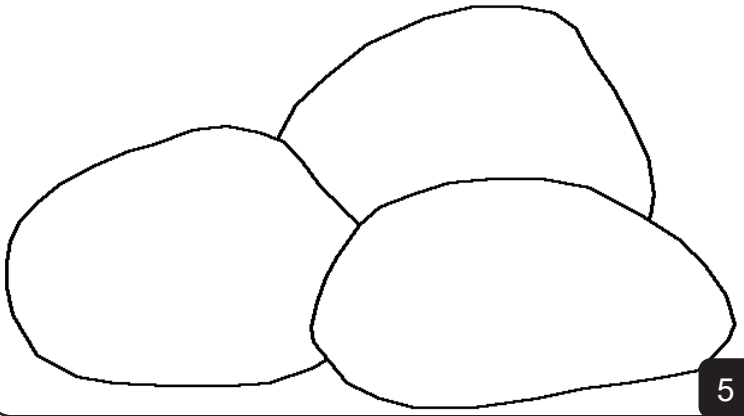

5

केवल सब्त के दिन को छोड़कर, पर्याप्त मन्ना के अलावा, पिछले दिन का बटोरा हुवा मन्ना कीड़ों से भर जाता था। इस विशेष सातवें दिन को लोग आराम करते थे और पिछले रात के बटोरे मन्ना को खाते थे।

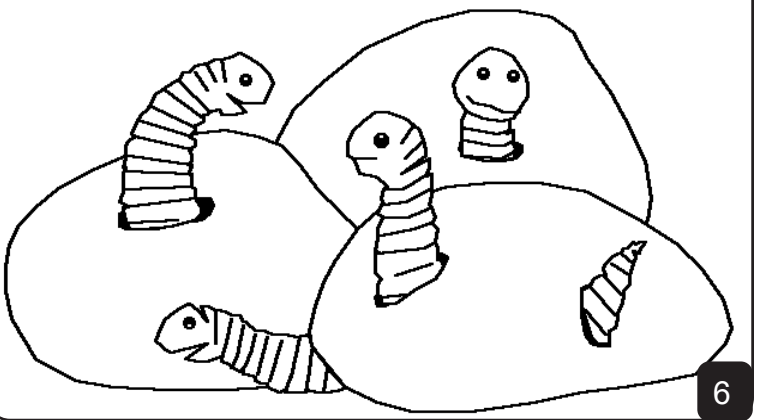

6

परमेश्वर रेगिस्तान में इस्राएलियों की पूरी देख भाल किया।

उसने उन्हें भोजन और पानी दिया - और दुश्मनों से रक्षा भी की। जब अमालेकियों ने उनपर हमला किया, तब इसराइल को लगातार जय मिलती रही। यह तब तक हुआ जब तक मूसा परमेश्वर की लाठी को ऊपर उठाये रहा।

7

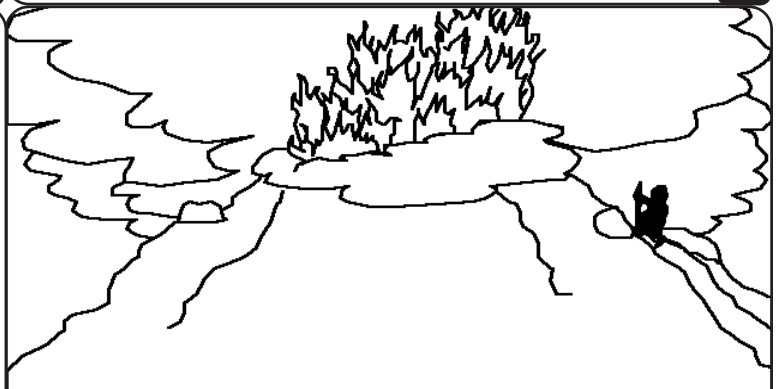

परमेश्वर ने इस्राएलियों से कहा, "यदि तुम मेरे वचनों का पालन करो तो तुम मेरे खास लोग होगे।" "सभी लोगों ने मूसा से कहा," परमेश्वर जो कुछ हमसे कहेंगे हम उसे करेंगे। वे सब सीनै पहाड़ के पास नीचे आये और इंतजार करने लगे जबतक मूसा परमेश्वर से मिलने ऊपर गया।

8

मूसा चालीस दिन तक पहाड़ पर परमेश्वर के साथ था। परमेश्वर पत्थर की दो पट्टियों पर दस आज्ञाओं को लिखा। उसने मूसा को बताया कि वह अपने लोगों का जीवन कैसा चाहता है।

9

1. "तू मुझे छोड़ दूसरों को ईश्वर करके न मानना"

2. "अपने लिये कोई मूर्ति न बनाना और न झुककर दण्डवत करना"

3. "तू अपने परमेश्वर का नाम व्यर्थ न लेना"

4. "तू विश्रामदिन को पवित्र मानने के लिये स्मरण रखना"

5. "तू अपने पिता और अपनी माता का आदर करना"

10

6. "तू हत्या न करना"

7. "तू व्यभिचार न करना"

8. "तू चोरी न करना"

9. "तू झूठी साक्षी न देना"

10. "तू लालच न करना"

11

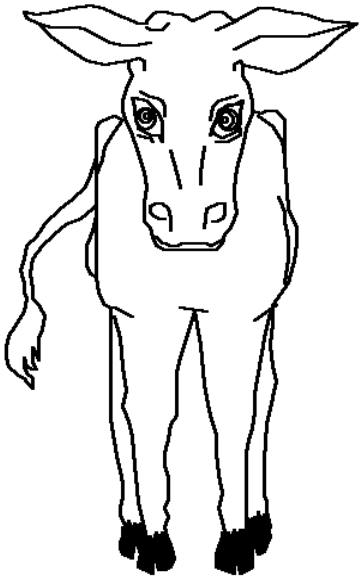

जब मूसा सीनै पर्वत पर परमेश्वर के साथ था तब इस्राएलियों ने कुछ दर्दनाक काम किया। उन्होंने हारून को एक सुनहरा बछड़ा बनाने का आदेश दिया - और वे परमेश्वर के बजाय उसकी पूजा की। परमेश्वर उनसे बहुत नाराज था। और तब मूसा भी।

12

जब मूसा उस बछड़े को और लोगों को नाचते देखा। वह पत्थर की पट्टियों को जमीन पर तोड़ डालीं। गुस्से में मूसा ने उस सुनहरे मूर्ति को नष्ट कर दिया। जिन्होंने उसकी पूजा की थी उन दुष्ट पुरुषों को भी वह नष्ट कर दिया।

13

परमेश्वर उन दो पत्थर की पट्टियों को पुनः प्रदान की। उसने मूसा से एक निवास स्थान का निर्माण के लिए कहा, जो चारों ओर बाड़े के साथ एक बड़ा तम्बू जहाँ परमेश्वर उनके लोगों के बीच रहेगा। उन्हें वहाँ परमेश्वर की आराधना करनी थी। परमेश्वर की उपस्थिति को बादल और आग के खम्भे दर्शाते थे।

14

कनान देश के नजदीक पहुँचने पर, परमेश्वर द्वारा वादा किये हुवे देश को देखने के लिए मूसा ने बारह जासूसो को भेजा। सभी जासूसों ने यह सहमती जतायी की देश बहुत खूबसूरत है! लेकिन केवल दो, यहोशू और कालेब, ही विश्वास किये कि परमेश्वर की मदद से इस देश को जीता जा सकता है।

15

अन्य दस जासूस उस देश के मजबूत शहरों और दिग्गजों से डरते थे। "हम उस देश पर विजयी नहीं हो सकते हैं," वे कराहे। परमेश्वर ने मिस्र में से उन्हें कैसे मुक्त किया,

ये महान बातें वे भूल चुके थे।

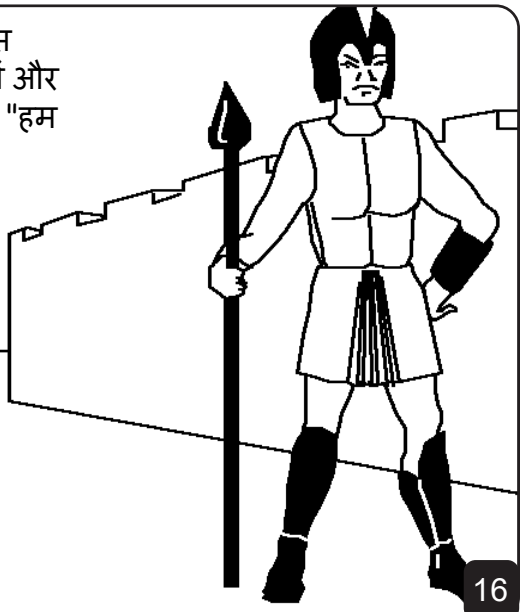

16

लोग उन दस अविश्वासी जासूसों की बातों पर विश्वाश किया। वे रोये और वापस मिस्र में जाने के लिए तैयार होने लगे। वे सब मूसा को जान से मारने की कोशिश भी किये!

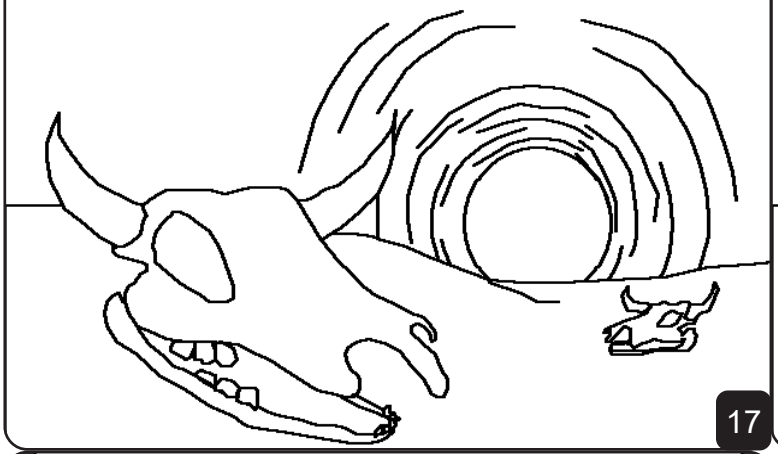

17

परमेश्वर ने मूसा की जान को बचाया। तब उसने लोगों से कहा, "तुम सब चालीस साल के लिए जंगल में भटकते रहोगे। केवल कालेब, जोशुआ, और उनकी संताने जीवित रहेंगी और उस जासूसी किये देश में प्रवेश करने पायेंगे।"

18

चालीस वर्ष

बाइबिल से, परमेश्वर के वाणी में कहानी

में पाया गया

निर्गमन 15 से गिनती 34

"जो आपके जीवन में प्रकाश देता है।"
प्लाज्म 119:130

ईश्वर (परमेश्वर) जानता है कि हमने ऐसे गुनाह किए हैं जिन्हें वह पाप कहता है. पाप की सज़ा मौत है.

ईश्वर (परमेश्वर) हमसे इतना प्रेम करता है कि उसने अपने पुत्र यीशु को भेजा कि हमारे पापों की सज़ा के रूप में वह टिकटी (क्रॉस) पर चढ़ कर अपने प्राणों की बलि दे दे. यीशु मरकर फिर जीवित हुआ और पुन: स्वर्ग चला गया. ईश्वर (परमेश्वर) अब हमारे पापों को क्षमा कर सकता है.

यदि आप अपने गुनाहों और पापों से बचना चाहते हैं तो उससे दुआ करें; प्रिय ईश्वर (परमेश्वर) मुझे विश्वास है कि यीशु ने मेरे लिए अपने जीवन की बलि दी और अब पुन: जीवित हुआ है. हे ईश्वर (परमेश्वर) तू मेरी ज़िंदगी में आ और मेरे पापों को माफ कर दे ताकि मैं एक नई ज़िंदगी जी सकूं और हमेशा हमेशा के लिए तेरे साथ रह सकूं. हे ईश्वर (परमेश्वर) मेरी मदद कर ताकि मैं तेरी संतान के रूप में तेरे लिए जी सकूं.
आमीन. जॉन 3:16

बाइबल पढ़ें और प्रतिदिन ईश्वर (परमेश्वर) से बात करें.